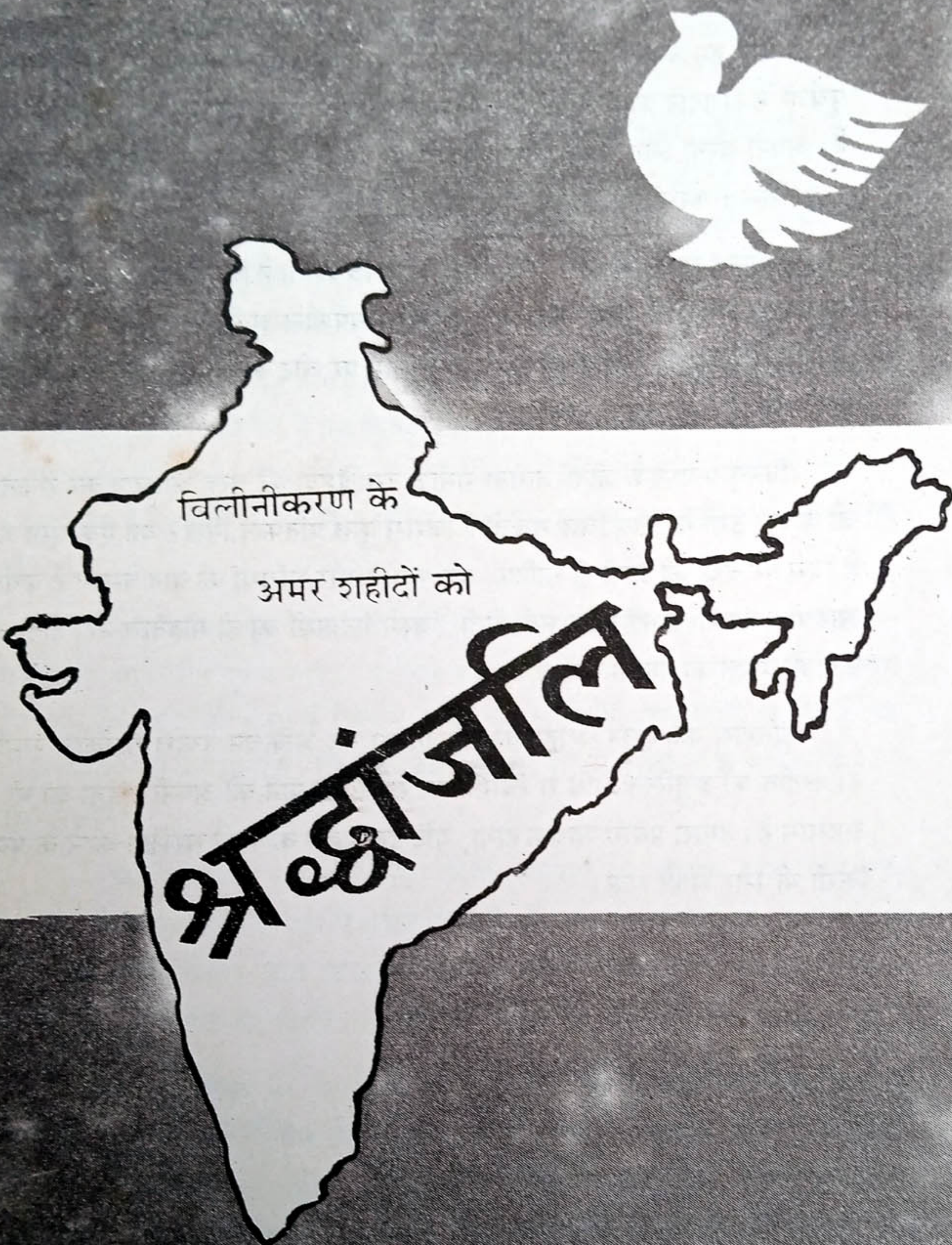

विलीनीकरण के

अमर शहीदों को

श्रद्धांजलि

जामवंत प्रकाशन बरेली (रायसेन) - 464668 (म.प्र.)

सम्पादक की कलम से

यदि हम अपनी गौरवशाली परंपराओं से अपरिचित रहते हैं और यदि हम अपने पूर्वजों के अवदान को भुला देते हैं तो दिशाहीन और पथभ्रष्ट होने का अंदेशा बना ही रहता है। अपनी धरती और अपनी समाज के सम्मान के लिए जो सर्वस्व न्यौछावर कर गए, उन्हें विस्मृत करना एक नैतिक अपराध होता है।

दुर्भाग्य से यह कहना और अनुभव करना विवशता है कि हम उस कृतघ्न क्षेत्र और समाज का अंग हैं जो अपने महान सपूतों और संघर्षशील अतीत को महत्वहीन करने का अपराधी है। शायद इसलिए कि न तो इनके नाम पर वोट कबाड़े जा सकते थे और न ही कोई अन्य दुकानदारी की जा सकती थी।

किन्तु क्या एक जीता-जागता समाज उस वेश्या की तरह आचरण कर सकता है जो केवल उसी के लिए बिछ सकती है जिससे कुछ प्रतिफल मिले? यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर चर्चा की जानी ही चाहिए। यहां साधन और सुविधा की बात बेमानी है क्योंकि आस्था पूजाघरों पर ही निर्भर नहीं होती, जिस्म लिबासों का ही मोहताज नहीं होता और ताज ही चाहत का पैमाना नहीं होता।

इतिहास की महान धरोहर को सहेजने का यह अकिंचन प्रयास ससंकोच समर्पित है। अतीत की अतुलित निधि से रंचमात्र को स्पर्श कर पाने की अपनी क्षुद्रता का भी हमें अहसास है। हमारा प्रयास सार्थक होगा, यदि इस महान कोष को संरक्षित करने के प्रयास किसी भी स्तर से हो सके।

पुण्य स्मरण

6 जनवरी, 1993

संपादन

याज्ञवल्क्य

साथ में संतोष रिछारिया, विजय प्रकाश तिवारी, अनिल वर्मा, राजकिशोर द्विवेदी एवं सुजय वासल

स्वाधीनता के लिए संघर्ष एक सनातन प्रक्रिया है। स्वतन्त्रता रूपी यज्ञ में अगणित आहुतियां दी जाती रही हैं। कालचक्र चलता रहता है। वर्तमान अतीत हो जाता है, किन्तु महान और गौरवशाली बलिदानों की पुण्य स्मृतियां अमूल्य धरोहरों के रूप में भविष्य को प्ररेणा देने के लिए सुरक्षित रखी जाती हैं।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम की दो यश गाथायें जामवंत की भूमि के नर्मदा अंचल में विस्मृति के गर्त में छिपी हुई हैं। वर्ष-प्रतिवर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस की वर्ष गांठ के उत्साह में 6 और 14 जनवरी की शौर्य गाथाओं को भुला दिया जाता है, जो भोपाल राज्य के भारत संघ में विलय का सोपान बनीं। विलीनीकरण आन्दोलन के इतिहास में बरेली बौरास को अनदेखा करना सहज नहीं है।

सम्पूर्ण भारत 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हो गया। यह कहना एक गंभीर तथ्यात्मक त्रुटि है। वास्तव में तब केवल ब्रिटिश भारत पर ही तिरंगा फहराया था। तब लगभग 600 छोटी-बड़ी रियासतें भारत के अधीन नहीं थीं। यह एक तिहाई थीं। विचित्र बात तो यह है कि इनमें से कई की जनसंख्या 100 एवं वार्षिक आय सौ रुपये से भी कम थी।

इस विडंबनापूर्ण स्थिति में एक राष्ट्र के रूप में भारत का एकीकरण अत्यन्त चुनौतीपूर्ण था। लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने चमत्कारिक क्षमता का परिचय देते हुए रियासतों को देश में विलीन करने के लिए तीन प्रणालियां अपनाईं। यह थीं-रियासतों का संघ बनाना, रियासतों का पड़ोसी प्रांतों में मिला दिया जाना एंव केन्द्र द्वारा शासन।

विलीनीकरण का सिलसिला बिना रक्तपात के चलता रहा। जूनागढ़, कश्मीर, हैदराबाद और भोपाल रियासतें ही ऐसी थीं, जहां की जनता को स्वाधीनता के लिए खून बहाना पड़ा। आठ लाख की आबादी वाले भोपाल राज्य का भारत संघ में विलय यहां की जनता के साहस और बलिदान की अमर गाथा है।

भोपाल राज्य की जनता के मन में भी शेष देश की तरह स्वाधीनता की चाह प्रबल हो चुकी थी। विलीनीकरण के स्वर बरेली, भोपाल, सीहोर, आष्टा, रायसेन, गैरतगंज, बाड़ी, सुल्तानपुर, गोहरगंज, बैरसिया, उदयपुरा, ओबेदुल्लागंज, सिलवानी, बेगमगंज, इछावर, मरदनपुर, शाहगंज, जावर एवं नसरूल्लागंज आदि स्थानों पर तीव्रता से सुनाई देने लगे थे। तत्कालीन भोपाल राज्य के बरेली से एक नारा उठा-'विलीनीकरण जिंदाबाद, तौजी (लगान) देंगे होशंगाबाद।' यह नारा नबाबशाही के विरूद्ध जन भावनाओं का प्रतीक बनकर गांव-गांव में गूंजने लगा।

नबाबी के प्रति विद्रोह की चिंगारी इतनी तीव्रता से भड़की कि 6 दिसंबर, 1948 को भोपाल नबाब ने बरेली से क्रांतिकारियों को गिरफ्तार करके सामंती दमन चक्र प्रारम्भ कर दिया। स्वतः स्फूर्त स्वाधीनता आन्दोलन ओर निरंकुश नबाबी के बीच प्रारम्भ हुआ टकराव बढ़ता ही चला गया। नबाबी का दौर अत्यन्त भयावह था। एक सिपाही जाकर गांव भर के सम्मान और मर्यादा को उछाल देता था। यह आन्दोलन पीड़ित जनता के आत्म सम्मान की लड़ाई थी, जिसके लिए संगठन, नेतृत्व आदि शब्द अधिक महत्वपूर्ण नहीं रह गए थे। इसकी तुलना फ्रांस की राज्य क्रान्ति से की जा सकती है।

1949 की 6 और 14 जनवरी इस टकराव की चरम सीमा थी। नबाबी हुकूमत अपने अस्तित्व को बचाने की आखिरी लड़ाई लड़ रही थी। इस अन्तिम प्रयास में साम, दाम, दण्ड और भेद नीति का हर संभव उपयोग किया जा रहा था।

वर्तमान मध्यप्रदेश के रायसेन जिले के बरेली और बौरास ने 1949 की 6 और 14 जनवरी को अपने लाड़ले सपूतों का रक्त स्वतंत्रता की देवी को अर्पित किया और इन अमर बलिदानों के बाद उठी तीव्र ज्वाला ने नबाबशाही का अन्त करके 1 जून 1949 को भोपाल राज्य का भारतीय आन्दोलन में विलय कराया। विलीनीकरण आन्दोलन अपने आप में स्वयं एक इतिहास है, किन्तु यहां इस इतिहास के उन दो स्वर्णिम पृष्ठों की पुण्य स्मृति महत्वपूर्ण है जो शासन एवं समाज की कृतघ्नता के तले दबकर रह गए हैं।

6 जनवरी 1949 को बरेली के साप्ताहिक बाजार का दिन गुरूवार था। इस दिन यहां एक आमसभा विलीनीकरण आन्दोलन के सिलसिले में होने वाली थी। दोपहर बारह बजे तक लगभग पांच हजार ग्रामीण यहां आ चुके थे। नबाबी पुलिस ने डी.आई. जी. गिरजेश नारायण बिसरिया के निर्देश पर ग्रामीणों से डण्डे लाठियां आदि छीन कर बड़ी मुश्किल से निहत्थे लोगों को सभास्थल तक जाने दिया। जन आन्दोलन को शक्ति से कुचलने की रणनीति पूर्व से ही तैयार कर ली गई थी।

उस समय पौने तीन बजे थे। सभा की कार्यवाही प्रारम्भ होने में कुछ समय था। तभी नबाबी झण्डे के नीचे तहसील में खड़े सर्किल इंस्पेक्टर ने सीटी बजाई। सीटी बजते ही बाजार में तैनात पुलिस और मिलेट्री सभा प्रांगण में बैठी निरीह जनता पर भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़ी। सभा स्थल पर बैठे महिलाओं और बच्चों को भी निर्ममता से मारा गया। निरंकुश नबाबी का यह नंगा नाच साढ़े पांच बजे तक नगर के भीतरी भाग और घरों तक पहुंच गया।

शाम छह बजे से नगर में कर्फ्यू लगा दिया गया। घरों में घुसकर नबाब के सिपाहियों ने मान-सम्मान और संपत्ति लूटी। घायलों और बेहोश व्यक्तियों को कड़कड़ाती सर्दी में दूर घने जंगल में ट्रकों से भरकर छोड़ा जाता रहा। रात आते-आते बरेली नगर एक श्मशान की तरह हो गया, जिसमें नबाब के नर पिशाच ताण्डव और अट्टाहस कर रहे थे।

इस भयंकर लाठी चार्ज में विलीनीकरण का नारा बुलंद करते हुए ग्राम उदयगिरी के जुगराज सोनी और सिनवाह के हरिजन युवा रामप्रसाद शहीद हो गए तथा हजारों लोग घायल हुए। विलीनीकरण आन्दोलन से संबद्ध रहीं श्रीमती शान्ति देवी ने उस समय श्रद्धांजलि दी-

छह जनवरी तुम्हारा बन्दन, सदा-सदा भोपाल करेगा

वह स्वर्णिम प्रभात जन-जन में, नव आशा, उत्साह भरेगा।

6 जनवरी 1949 को दो सपूतों के बलिदान और नबाबी दमन चक्र से जनता की स्वतंत्रता की ललक उग्र हो गई। भोपाल की सेन्ट्रल जेल और बैरागढ़ की जेल विलय बंदियों से भर गई। अस्थायी जेलें बनाई गई, किन्तु सहनशील भोपाल राज्य की जनता की पहली बगावत कुचली नहीं जा सकी। बिना नेतृत्व की ओर निहारे यह क्रान्ति की मशाल उत्तर हो गई। वास्तव में जनता इसे धर्म युद्ध मान चुकी थी।

वह मकर संक्रान्ति 14 जनवरी शुक्रवार का दिन था। इस दिन तिरंगे के सम्मान के लिए भारत माता के चार सपूत स्वयं को समर्पित कर स्वाधीनता इतिहास की अनूठी धरोहर बन गए। नर्मदा के बौरास घाट पर मकर संक्रान्ति का मेला भरा हुआ था। परंपरागत रूप से भरने वाले इस मेले मे प्रतिवर्ष की तरह हजारों ग्रामीण आए हुए थे। 6 जनवरी को बरेली मे हुई नृशंस घटना से जनमानस उद्वेलित था। नबाबशाही के विरूद्ध अपनी घृणा को ग्रामीण निर्भीक होकर व्यक्त कर रहे थे। मेला स्थल पर ही आमसभा चल रही थी, जिसमें पच्चीस हजार के लगभग जन समूह उपस्थित था। मंच पर तिरंगा फहराकर वक्ताओं ने नबाबी के दमन चक्र की कठोर भर्त्सना करते हुए भारत संघ में विलय का संकल्प दोहराया।

मेले में उपस्थित नबाबी की पुलिस के लिए यह असहनीय स्थिति थी। अभी तक वे निरंकुश हो अत्याचार करते रहते थे, जिसका कहीं भी विरूद्ध नहीं होता था। अदना-सा सिपाही भी अपने आपको नबाब समझता था एवं इसी तरह व्यवहार करता था।

सभा स्थल पर ही मौजूद थानेदार जाफर अली उबला जा रहा था। उसने अचानक गोली चलाने का आदेश दे दिया।

ग्राम भुंआरा के 26 वर्षीय विशाल सिंह ने थानेदार जाफर अली का हेट अपनी लाठी से नीचे गिरा दिया। थानेदार ने उसी क्षण विशाल सिंह के पैर में गोली मारकर उन्हें गिरा दिया। विशाल सिंह के गिरते ही बौरास के सोलह वर्षीय तरूण छोटे लाल झण्डा लेकर आगे बढ़े और पुलिस की गोली से धराशायी हो गए। छोटेलाल के हाथों से झण्डा सुल्तानगंज के पच्चीस वर्षीय युवा धनसिंह ने संभाला और वह भी जाफर अली की गोली खा सदैव के लिए मातृभूमि की गोद में सो गए। बौरास के तीस वर्षीय मंगल सिंह ने इस झण्डे को संभाला तथा गोली लगते ही अन्तिम सांस के साथ विशाल सिंह को सौंप दिया, जो जाफर अली द्वारा पैर में गोली मारे जाने से बेहोश हो गए थे। होश में आकर विशाल सिंह ने थानेदार से कड़ककर कहा-"अब सीने पर गोली मार हत्यारे।" जाफर ने दनादन दो गोलियां विशाल सिंह के सीने पर दाग दीं। विशाल भी मां भारती की गोद में हमेशा के लिए सो गए। इन बलिदानों के बाद भी जन समूह ने सीना खोलकर नबाबशाही की बन्दूकों का मुकाबला इसके खात्मे तक किया।

इसके बाद का दृश्य भंयकर था। स्वतंत्रता का मूल्य प्राणों से अधिक था। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन की परवाह किए बिना विद्रोह पर आमादा था। नबाबी के निशान ध्वस्त होने लगे। मां नर्मदा की लहरों की तरह उठी स्वाधीनता लहर में नबाबी तिरोहित हो गई।

स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर जनता ने इन महान शहीदों के शव और घायल व्यक्तियों को लेकर गाडरवारा प्रस्थान किया। स्वतंत्र भारत के गाडरवारा की जनता ने 'भारत माता की जय' के उद्घोष के साथ इनका स्वागत किया तथा विराट समूह ने शहीदों की अन्तिम यात्रा में भाग लेकर उनके पार्थिव शरीर को मातृभूमि में विलीन होते हुए देखा।

विलीनीकरण के पर्याय बने साप्ताहिक 'नई राह' में निर्मल कुमार ने 1949 में लिखा -

बरेली की आहुतियां बलिदान स्थल वह बौरास
इनकी अमर दिव्य गाथा को भूल सकेगा क्या इतिहास।

किन्तु ऐसा लगता है जैसे इतिहास इन्हें भूल-सा गया। किसी भी पाठ्यपुस्तक में भोपाल राज्य के स्वाधीनता संग्राम की चर्चा नहीं है। इतिहास की कोई पुस्तक यह नहीं बताती कि बरेली-बौरास की जनता ने स्वाधीनता संग्राम में धरती का रक्त तिलक किया था। वह भी तब जनवरी, 1949 में जबकि 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश भारत अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो चुका था। यहां के शहीदों के लिए तो केवल यह सच हुआ।

कहीं रात में सोये होंगे, नदी नर्मदा के तट पर
लहरें उन्हें सुलाती होंगी, शांत, मौन थपकी देकर।

1949 में ही वर्तमान राष्ट्रपति एवं तत्कालीन लखनऊ विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने लिखा था-' मुझे इस बात का गर्व है कि मैं उस भूमि का पुत्र हूं, जहां की जनता इतनी जाग्रत और निर्भीक है, जहां के वीर बौरास का अद्भुत दृश्य उपस्थित कर सकते हैं। झण्डा वन्दन की पंक्ति 'शान न इसकी जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये' सच करके दिखा सकते हैं, जहां की वीरांगनाओं ने बरेली, बौरास के अमर शहीद पैदा किये हैं, जहां के शेर इन्सानों की जिन्दादिली को जरा भी जेल और डण्डों की यातनायें कम नहीं कर सकी।"

'भोपाल की नबाबी हुकूमत की नींव 1709 में अफगानी सरदार दोस्त मोहम्मद खां ने डाली। दोस्त मोहम्मद खां औरंगजेब के समय बैरसिया का मुस्ताजिर था जो बाद में स्वतंत्र शासक बन गया। जगदीशपुर (इस्लामनगर) में नदी के किनारे उसकी गोंडों से लड़ाई हुई और तभी से उस नदी का नाम हलाली (खूनी) हो गया। पठानों की जीत हुई। रानी कमलापति को दोस्त मोहम्मद को कुछ गांव देना पड़े।

बाद में धर्म परायण विधवा रानी कमलापति डूबकर मर गई और शासन नबाब दोस्त मोहम्मद खां के हाथों में आ गया। तेरह पीढ़ियों ने भोपाल पर राज्य किया इनमें पांच पीढ़ी तक बेगमें थीं। अन्तिम बेगम सुल्तान जहां थी। तीसरी पीढ़ी में पेशवाओं ने आधे भोपाल पर अधिकार कर लिया था और पांचवी पीढ़ी के नबाब गोस मोहम्मद खां के जमाने में तो सारा इलाका ही हाथ से निकल गया।

सातवीं पीढ़ी के नबाब नजीर मोहम्मद खां ने सन् 1918 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी से समझौता करके पेशवाओं से बहुत सा हिस्सा पुनः प्राप्त किया। सन् 1857 की क्रान्ति के समय सिकन्दर जहां बेगम ने अंग्रेजों की सहायता की जिसके फलस्वरूप इनाम में बेरसिया परगना फिर से मिल गया।

अंग्रेज भक्ति और कृपा पर भोपाल का शासन प्रबन्ध चलता रहा। सीहोर छावनी भी दे दी गई। आदि मानव, पौराणिक कथाओं, सम्राट अशोक, राजपूतों, गोडों, राजा भोज और रानी कमलापति से संबद्ध रही जिस भूमि पर जगदीशपुर (इस्लामनगर) से दोस्त मोहम्मद खां ने सामन्ती शासन की नींव रखी, उसका हमीदुल्ला खां के जमाने में। जून 1949 को औपचारिक रूप से भारतीय गणराज्य में विलय हो गया।

बरेली-बौरास की विलीनीकरण यज्ञ की महान आहुतियां गौरवशाली अतीत का भूला-बिसरा पृष्ठ बन चुकी हैं। इन दोनों शहीद स्थलों पर ऐसा कुछ नहीं किया गया

जो भावी पीढ़ियों को महान धरोहरों से परिचित कराने का दायित्व निभाये। अभी हमारे बीच बहुत से वे क्रान्तिकारी विद्यमान हैं, जिन्होंने भोपाल राज्य के विलीनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। क्या हम समय रहते इन गौरव गाथाओं को पूर्ण प्रामाणिकता के साथ सहेज कर इस कलंक से मुक्त होने का प्रयास नहीं कर सकते कि हमने अतीत की प्रेरणा भविष्य को सुरक्षित नहीं रखी।

विलीनीकरण की कवितायें

अनुपम वह इतिहास हुआ

सदियों से पीड़ित जनता में, उठी एक स्वाधीन लहर
विद्रोही ज्वाला प्रचण्ड हो, फैल गई थी इधर-उधर।
बहुत काल से कुचली जनता, सहसा उठी लक्ष्य लेकर
विलयकरण संग्राम मचा, भोपाल भूमि के अंचल पर।
गांव-गांव से गूंज उठे स्वर-तोड़ेगें सामंती जाल
निर्दोषों के खून के बल पर, अब न टिकेगा यह भोपाल।
आठ लाख के प्राण विकल हो, आगे बढ़े विलय की ओर
कुटिल गुलामी के शासन को, चले मिटाने तोड़ मरोड़।
दमन चक्र को लिये नवाबी ने जनता पर वार किये
लाठी चलीं गोलियां बरसीं कंपित कारागार हुए।
जलसे हुए, फेरियां निकली, महिलाओं की भीड़ चली
ज्वार उठा जैसे लहरों में, अन्यायी की नाव हिली।
ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में, वह अनुपम इतिहास हुआ
विद्रोही जनता की ताकत का दुनिया को भास हुआ।
कितने घायल, कितने जूझे, कितनों का सर्वस्व लुटा
लेखा इसका क्या, जन-जन था, आत्मार्पण के लिए जुटा।

वीर बरेली की आहुतियां, बलिदानी स्थल बौरास
इनकी अमर दिव्य गाथा को, भूल सकेगा क्या इतिहास?
डटे रहे थे वीर, बरसती गोली की वौछारों में
हुये शहीद, आन ना छोड़ी, झुलस गए अंगारों में।
जीर्ण कुटी में माता, पत्नी, नन्हें बच्चे छोड़ गये
उनसे नाता तोड़ा सब, जनता से नाता जोड़ गये।
कहीं रेत में सोये होंगे, नदी नर्मदा के तट पर
लहरें उन्हें सुलाती होंगी, शान्त-मौन थपकी देकर।
उनकी रज ही बस अब होगी, हमको निधि बरदानों की
याद कभी क्या भूल सकेंगे, हम उनके बलिदानों की।

('नई राह' से)

निर्मल कुमार जैन

शहीदों के मजार

यहां पर शहीदों के दो हैं मजार
घाट बौरास का और बरेली बाजार।
सन् उनन्चास तक ये जिला रायसेन
नबाबी हुकूमत का निगले था ग्रहण
खुल न पाये थे अब तक भी मुक्ति के द्वार।
त्रस्त होकर जली ज्योति भोपाल में
नर और नारी में, वृद्धों में, आवाल में
जल पड़ी आन्दोलन की ज्वाला अपार।
नर्मदा की लहर बोलने लग गई
और जगाने लगे विन्ध्य के वायुवन।
उठ पड़े स्वर अनेकों बड़े जोश में
आई आवाज-होगा विलीनीकरण।
वीर मंजिल को पाने बढ़े दुर्निवार।
वज्र कौंधा कुशासन के अधिकार का
सामना था निहत्थे का, हथियार का
मुक्ति संग्राम में सोये खाके प्रहार।
वन्दना युग तुम्हारी, करेगा सदा
शीश तुम पर झुकेगा हमारा सदा
दीप घर-घर जले, तम के टूटे कगार।

■ अवधनारायण रावत 'सरल'

विलीनीकरण आन्दोलन के महान सेनानियों को
हमारा शत- शत नमन्

जिन्होंने भोपाल राज्य का
'मेरा भारत महान'
में विलय कराया

शिवाजी स्टोन्स प्रा. लिमिटेड
एम एक्स-44, ई- 7 एक्सटेन्शन
अरेरा कालोनी भोपाल (म.प्र.)
दूरभाष- 566383

बाहुबली रेस्टोरेंट
नया बस स्टेण्ड, बरेली